SLC (University of Delhi)
Shyam Lal College
NAAC A++ & NIRF AIR 68th

NRC - DELHI

श्यामलाल कॉलेज

हिन्दी विभाग, आईक्यूएसी एवं भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (उत्तरी क्षेत्रीय केंद्र)

के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित

दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी

(हाइब्रिड मोड)

विषय : भारतीय दर्शन और भक्तिकाव्य

तिथि : 7-8 फरवरी, 2025

स्थान : बहुउद्देश्यीय सभागार, श्यामलाल कॉलेज

भारतीय समाज, संस्कृति और ज्ञान परंपरा को समझने के लिए भक्ति और दर्शन दोनों मूल स्रोत के रूप में अपना महत्व रखते हैं। भक्ति साहित्य में भारतीय संतों और भक्तों ने मानव मूल्य एवं भारत की अपरिग्रही संस्कृति का बहुत ही सुंदर निदर्शन किया है जिसके सहारे आज के भौतिकवादी युग की कई विडम्बनाओं का समाधान किया जा सकता है। भक्ति एवं दर्शन का मूल भाव त्याग एवं उदारता रहा है। किसी भी संवेदनशील समाज के लिए ये दोनों मूल्य अपरिहार्य हैं। आज हमारे समाज में ये मूल्य लगातार विघटित हो रहे हैं। ऐसे में यह आवश्यक हो जाता है कि हम अपने मूल्यों को पुनः भक्ति और दर्शन की ज्ञान परंपरा के आलोक में परिभाषित कर उससे प्रेरणा लें तथा उसका अनुसरण करें। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत संगोष्ठी की संकल्पना की गयी है जिसके बहाने दर्शन की विविध शाखाओं की चर्चा - परिचर्चा तो होगी ही साथ ही भक्ति साहित्य के सार्वभौमिक मूल्यों की व्याख्या भी अपेक्षित है जो आज भी अपनी अर्थवत्ता और प्रासंगिकता बनाए हुए है।

कॉलेज के बारे में

श्यामलाल कॉलेज दिल्ली विश्वविद्यालय का एक प्रतिष्ठित कॉलेज है, जिसने विगत वर्षों में नैक द्वारा ए++ ग्रेड एवं उच्च एनआईआरएफ रैंकिंग अर्जित करके अपनी अकादमिक गुणवत्ता और साख का प्रदर्शन किया है। श्यामलाल कॉलेज का हिन्दी विभाग, महाविद्यालय का एकमात्र स्नातकोत्तर विभाग है, जिसकी प्रतिष्ठा इसके प्राध्यापकों एवं उनके सतत शोध प्रकाशनों के कारण है। विभाग के कई सदस्य देश के शीर्ष साहित्यिक पुरस्कारों से पुरस्कृत भी हो चुके हैं। विभाग के प्राध्यापकों की पुस्तकें प्रतिष्ठित प्रकाशनों से प्रकाशित हैं और पुरस्कृत हुई हैं।

भारतीय दर्शन और भक्तिकाव्य

दर्शन और भक्ति भारतीय संस्कृति के दो बड़े स्तम्भ रहे हैं, जिनके आलोक में भारतीय संस्कृति और साहित्य की व्याख्या और समीक्षा की गयी है। भारतीय दर्शन समूची दुनिया में अद्वितीय दर्शन रहा है। दर्शन और भक्ति में अन्योन्याश्रित सम्बन्ध भी है। मसलन, उपनिषदों में निहित भक्ति सूत्रों को दर्शन के माध्यम से व्याख्यायित किया गया। दर्शन का तात्पर्य है देखना और दिखाना। दार्शनिकों ने जीवन और जगत को जिस रूप में देखा उसे दर्शन के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। दर्शन की विविध सरणियों में ब्रह्म, जीव, जगत, माया संबंधी विचारों की दार्शनिक व्याख्या की गयी है और यह चिंतन इस बात का प्रमाण है कि हमारी ज्ञान परम्परा कितनी समृद्ध एवं प्रखर रही है कि हमारे ऋषियों ने बहुत पहले जीवन के गंभीर और महत्वपूर्ण विषयों पर बेहद गंभीर चिंतन प्रस्तुत कर दिया था तब जबकि दुनिया में ज्ञान-विज्ञान का ठीक से विकास भी नहीं हुआ था। कपिल, जैमिनि, कणाद जैसे दार्शनिकों ने सांख्य, न्याय आदि दर्शन का प्रणयन कर भारतीय दर्शन को न केवल समृद्ध किया बल्कि दुनिया के अन्य दार्शनिकों के लिए प्रेरणास्रोत भी बने। जर्मनी का विद्वान शापेनहावर उपनिषदों पर मुग्ध था और उसे समूची दुनिया का अद्वितीय साहित्य कहता है, यह हमारे दर्शन की शक्ति का ही प्रमाण है। जहाँ तक भक्ति और दर्शन के संबंध का प्रश्न है भागवत और पुराणों की यात्रा करते हुए बाद में यही दर्शन भक्त कवियों की सरस वाणी में भक्ति के पदों के रूप में निसृत हुआ। जहाँ एक ओर दर्शन भारतीत ज्ञान मीमांसा की चिंतन पराकाष्ठा को अभिव्यक्त करता है वहीं दूसरी ओर भक्ति साहित्य उस ज्ञान की सरस एवं प्रवाहमयी भावधारा को अभिव्यक्ति देता है। यों ही नहीं भक्तिकाल को स्वर्णकाल कहा गया। यह देश तुलसी ,कबीर और सूरदास के पदों और कविताओं को आज भी सँजोए हुए है और उससे ऊर्जा और जीवनी शक्ति पाता रहा है। आखिर वह कौन सी ताकत है जो इन कवियों को आज भी जीवंत बनाए हुए है- इन सूत्रों पर विचार करना इस संगोष्ठी का उद्देश्य है।

इतिहास और पौराणिक संदर्भों को लेकर आज नवीन वैचारिक विमर्श प्रस्तुत किए जा रहे हैं। ऐसे में यह आवश्यक हो जाता है कि दर्शन जैसे महत्वपूर्ण और गंभीर विषय के आलोक में भक्तिकाव्य की पुनर्व्याख्या हो और साथ ही उसके सामाजिक एवं सांस्कृतिक पक्षों पर भी बातचीत हो जिससे वे पक्ष भी उजागर हो सकें जो विद्वत जनों की दृष्टि से अभी भी ओझल। साहित्य के विविध पक्षों पर होने वाले आयोजन न केवल साहित्यिक सन्दर्भों को विस्तार देते हैं बल्कि साहित्य को समझने की तार्किक दृष्टि भी प्रदान करते हैं।

मुख्य विषय के अतिरिक्त कुछ अन्य उप विषय दिए जा रहे हैं जिन पर प्रतिभागी आलेख भेज सकते हैं। ये उप विषय इस प्रकार हैं :

- भक्ति साहित्य की दार्शनिक पृष्ठभूमि
- तुलसी की भक्ति चेतना
- भक्तिकाव्य और सूरदास
- सूफी भक्ति दर्शन
- कबीर की भक्ति चेतना
- भक्ति साहित्य और रामकाव्य परंपरा
- मराठी में भक्ति साहित्य
- गुजराती में भक्ति साहित्य
- कश्मीर की भक्त कवि ललदद्य
- भक्ति कविता और संत तिरुवल्लुवर
- भक्ति काव्य की लोक चेतना
- भोजपुरी का भक्ति साहित्य
- अवधी का भक्ति साहित्य
- उड़िया में भक्ति साहित्य
- बांग्ला और भक्ति साहित्य
- आधुनिक कविता की दार्शनिक चेतना

नोट: इनके अतिरिक्त अन्य उपविषयों पर भी आलेख भेजे जा सकते हैं।

संगोष्ठी में सहभागिता हेतु आवश्यक निर्देश

संगोष्ठी में पंजीकरण हेतु गूगल लिंक :

https://docs.google.com/forms/d/e/1FAIpQLScwciGFxqp3O3rAqWIC6fqVw2laceUXvnqqbuPzS4VBqoheKA/viewform?usp=sf_link

पंजीकरण हेतु स्कैन करें

सारांश (Abstract) भेजने की अंतिम तिथि : 30 जनवरी, 2025
शोध आलेख भेजने की अंतिम तिथि : 2 फरवरी, 2025
आलेख प्रेषित करने का ई-मेल : hindidept@shyamlal.du.ac.in
पूर्ण आलेख / शोध आलेख (शब्द सीमा 2500 – 5000 शब्द)
हिंदी फॉन्ट - यूनिकोड
फॉन्ट साइज – 12, स्पेस 1.5

पंजीकरण शुल्क :

- प्राध्यापक - 500/-
- शोधार्थी - 400/-
- विद्यार्थी - 200/-

भुगतान विवरण :

Name of Account Holder : Shyamlal College Conference and Seminars Account
Bank Name : Central Bank of India
Bank Account Number (Saving) : 3731428412
IFSC Code : CBIN0283941
MICR Code : 110016147

यूपीआई भुगतान के लिए स्कैन करें

भुगतान विवरण भेजने का ई-मेल पता : hindidept@shyamlal.du.ac.in

डॉ. सत्य प्रिय पाण्डेय
संगोष्ठी संयोजक एवं विभाग प्रभारी

डॉ प्रभात शर्मा
सह –संयोजक

डॉ राजकुमार प्रसाद
सह–संयोजक

प्रो. रवि नारायण कर
संरक्षक, प्राचार्य

प्रो. कुशा तिवारी
निदेशक, आईक्यूएसी

आयोजक सदस्य :

प्रो. हेमंत कुकरेती डॉ. नंदकिशोर डॉ. राकेश मीणा डॉ. सुजाता तेवतिया

डॉ. समरेन्द्र कुमार डॉ. अमिताभ कुमार डॉ. अवनीश मिश्र डॉ. हनुमत लाल मीणा डॉ. सुमन डॉ. लक्ष्मी विश्नोई

डॉ. निधि मिश्रा रश्मिता साहू डॉ रमेश बर्णवाल

: 8750483224 (डॉ सत्य प्रिय पाण्डेय), 8383812304 (डॉ सुमन), 8700572031 (रश्मिता साहू)
: hindidept@shyamlal.du.ac.in
श्यामलाल कॉलेज, जीटी रोड, शाहदरा, दिल्ली - 110032

SLC (University of Delhi)
Shyam Lal College
NAAC A++ & NIRF AIR 68th

NRC - DELHI

श्यामलाल कॉलेज

हिन्दी विभाग, आईक्यूएसी एवं भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (उत्तरी क्षेत्रीय केंद्र)

के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित

दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी

(हाइब्रिड मोड)

विषय : भारतीय दर्शन और भक्तिकाव्य

तिथि : 7-8 फरवरी, 2025

स्थान : बहुउद्देश्यीय सभागार, श्यामलाल कॉलेज

संगोष्ठी में पंजीकरण हेतु स्कैन करें

या इस लिंक का इस्तेमाल करें
https://docs.google.com/forms/d/e/1FAIpQLScwciGFxqp3O3rAqWIC6fqVw2laceUXvngqbuPzS4VBqoheKA/viewform?usp=sf_link

सारांश (Abstract) भेजने की अंतिम तिथि : 30 जनवरी, 2025
शोध आलेख भेजने की अंतिम तिथि : 2 फरवरी, 2025
आलेख प्रेषित करने का ई-मेल : hindidept@shyamlal.du.ac.in
पूर्ण आलेख / शोध आलेख (शब्द सीमा 2500 – 5000 शब्द)
हिंदी फॉन्ट - यूनिकोड , फॉन्ट साइज – 12, स्पेस 1.5
पंजीकरण शुल्क :

- प्राध्यापक - 500/-
- शोधार्थी - 400/-
- विद्यार्थी - 200/-

यूपीआई भुगतान के लिए स्कैन करें

डॉ. सत्य प्रिय पाण्डेय
संगोष्ठी संयोजक एवं विभाग प्रभारी

डॉ प्रभात शर्मा
सह –संयोजक

डॉ राजकुमार प्रसाद
सह–संयोजक

प्रो. रवि नारायण कर
संरक्षक, प्राचार्य

प्रो. कुशा तिवारी
निदेशक, आईक्यूएसी

: 8750483224 (डॉ सत्य प्रिय पाण्डेय), 8383812304 (डॉ सुमन), 8700572031 (रश्मिता साहू)

: hindidept@shyamlal.du.ac.in

: श्यामलाल कॉलेज, जीटी रोड, शाहदरा, दिल्ली –110032